प्रतिदिन

एनआईए की कार्रवाई मंजिल तक पहुंचे

***इच्छाशक्ति** प्रबल हो तो कुछ भी असंभव नहीं है. सरकार और सरकारी जांच एजेंसियां चाह लें, तो संगठित गिरोहों में भी खौफ पैदा हो सकता है. उन्हें जड़ से खत्म किया जा सकता है. नेशनल इन्वेस्टिगेशन एजेंसी (एनआईए) ने अचानक मंगलवार तड़के आठ राज्यों में ताबड़तोड़ कार्रवाई कर इस दिशा में इच्छाशक्ति दिखाई है. बीते तीन-चार वर्ष में राजस्थान, पंजाब, हरियाणा और दिल्ली समेत देश के कुछ राज्य संगठित अपराधियों के लिए सुरक्षित पनाहगाह बनते जा रहे हैं. आए दिन गैंगवार, फिरौती और बेगुनाहों की हत्याओं से आम आदमी भयभीत नजर आता है. अपराधियों के हौसले इतने बुलंद हैं कि न उन्हें सरकार का कोई डर रहा और न ही पुलिस का खौफ.पहली बार इतने बड़े पैमाने पर एनआईए ने गैंगस्टर्स के गुर्गों के यहां छापे मारकर उनकी कुंडलियां खंगालने की शुरूआत की है. एनआईए को इस अभियान में कितनी सफलता मिलेगी, यह तो भविष्य ही बताएगा. लेकिन, इतना तय है कि इतने बड़े अपराध तंत्र को अकेले एनआईए समाप्त नहीं कर सकता. इस काम में उसे संबंधित राज्य सरकारों की भी मदद लेनी होगी. एक राज्य में अपराध कर दूसरे राज्य में ठिकाना बनाने की प्रवृत्ति पर लगाम लगानी होगी. यह सही है कि अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग दलों की सरकारें हैं. वोट जुगाड़ने की राजनीति में एक-दूसरे पर आरोप मढ़ने की परंपरा भी किसी से छिपी हुई नहीं है. एनआईए को सभी राज्यों की पुलिस के बीच समन्वय बनाने की पहल भी करनी होगी. अपराधी गिरोहों को पुलिस प्रशासन में बैठे कुछ लोगों से भी मदद मिलने की बातें सामने आती रहती हैं. ऐसे लोगों की पहचान कर उन्हें उनकी असली जगह पहुंचाना भी पहली प्राथमिकता होनी चाहिए. गैंगस्टर्स जेल में बैठकर भी अपराधों को अंजाम दे रहे हैं. समझने वाली बात यही है कि जेल में उनके पास मोबाइल कौन पहुंचाता है. संगठित अपराध को जड़ से उखाड़ना है, तो इन सभी पहलुओं को समझकर इनका तोड़ निकालना होगा.कुछ अपराधी संगठनों की पाक खुफिया एजेंसी आइएसआइ से सांठगांठ की खबरें भी सामने आती रहती हैं. ऐसे संगठनों से निपटने के तमाम दूसरे उपायों पर भी गौर करना होगा. इन अपराधी संगठनों की जड़ें समाज में गहरे तक फैली हुई हैं. इन्हें भी साफ करना होगा, तभी इनसे छुटकारा मिल सकता है. एनआईए की कार्रवाई स्वागतयोग्य है और इसे मंजिल तक पहुंचाने के लिए तमाम जरूरी कदम उठाए जाने चाहिए.*

ईश्वर अल्लाह तेरो नाम

गांधीजी और बाबा साहब आंबेडकर के महती प्रयासों के बावजूद आज भी मंदिर में प्रवेश पर अनुसूचित जाति वाले हिंसा का शिकार हो जाते हैं. आस्थाओं का कोई गणितीय फार्मूला नहीं हुआ करता. राष्ट्र, राष्ट्रीय चिंतन और नागरिक समस्याओं के समाधान का पथ तो संविधान प्रशस्त करता है.

भारत विभाजन का विरोध करने और 'हिंदू-मुसलमान एक कौम' के सिद्धांत पर दृढ़ता से चलने के लिए मशहूर, मुसलमानों के संगठन जमीयत-उलेमा-ए-हिंद का दिल्ली के रामलीला मैदान में तीन दिन का जलसा एजेंडे से भटक गया. मकसद था धार्मिक सद्भावना, लेकिन छिड़ गया विवाद. दो गुटों में बंटी, जमीयत के एक गुट के नेता मौलाना अरशद मदनी ने अल्लाह और ओम को एक बता दिया. अखबारी रिपोर्टों के मुताबिक, उन्होंने कहा, 'हम अल्लाह कहते हैं, आप ईश्वर कहते हैं, फारसी बोलने वाले खुदा कहते हैं और अंग्रेजी बोलने वाले गॉड कहते हैं.' इससे पहले दूसरे गुट के नेता मौलाना महमूद मदनी के प्रकाशित बयान में कहा गया, 'सबसे पहले नबी और प्रथम मानव आदम भारत की धरती पर अवतरित हुए. यह धरती इस्लाम का जन्मस्थान और मुसलमानों की पहली मातृभूमि है...इस्लाम इसी देश का धर्म है और सबसे पुराना भी.'

सम्मेलन में मौजूद हिंदू धर्माचार्यों और हिंदुत्ववादियों ने इन बयानों पर सख्त एतराज जताया. जैन धर्मगुरु लोकेश मुनि मंच से उतर आए. विश्व हिंदू परिषद के प्रवक्ता ने कहा, 'यह सद्भावना सम्मेलन था या जमीयत की जहरीली जमात का जमावड़ा. यह इस देश में नहीं चलेगा.' हिंदू सेना और यूनाइटेड हिंदू नामक संगठन विरोध प्रदर्शनों पर उतर आए. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़े मुस्लिम राष्ट्रीय मंच ने सर संघचालक मोहन भागवत को उद्धृत किया, 'इस देश के सभी लोगों का डीएनए एक है. हमारा राष्ट्र, पूर्वज और परंपराएं एक हैं. राष्ट्र सर्वोपरि है.'

अल्लाह और ओम को एक बताने पर हिंदुत्ववादियों ने आपत्ति की, तो बरेलवी मसलक ने भी इससे मिलती-जुलती बात कह डाली. भारत और पाकिस्तान के ज्यादातर मुसलमान जिस बरेलवी मसलक के अनुयायी बताए जाते हैं, उसी के दरगाह आला हजरत के मीडिया प्रभारी नासिर कुरेशी ने मुफ्ती मोहम्मद सलीम बरेलवी का वक्तव्य जारी किया, 'अल्लाह को सिर्फ उन्हीं नामों से पुकार सकते हैं, जिनका विवरण कुरान और हदीस में हो या इमामों ने उल्लेख किया हो. दारुल उलूम देवबंद के फतवा विभाग को कार्रवाई करनी चाहिए.'

बरेलवी मसलक के हस्तक्षेप की पृष्ठभूमि है. बरेलवियों और देवबंदियों में पुरानी लाग-डांट है. दोनों एक-दूसरे के खिलाफ कठोर भाषा का इस्तेमाल करते रहे हैं, यहां तक कि लंबे अरसे तक उन्होंने एक-दूसरे को सच्चा मुसलमान भी नहीं माना. बरेलवी मसलक पर सूफी मत का प्रभाव रहा है. वे दरगाहों में जाने को गलत नहीं मानते. देवबंदी इससे इत्तफाक नहीं रखते. हिंदू-मुस्लिम संबंधों पर भी अतीत में दोनों संगठनों में बुनियादी मतभेद रहे हैं. अहमद रजा खान बरेलवी ने असहयोग आंदोलन में मुसलमानों की शिरकत के खिलाफ फतवा जारी किया था, लेकिन इधर कुछ अरसे से कड़वाहट दूर करने की कोशिशें होती रही हैं.

विवाद अरशद और महमूद, दोनों मौलानाओं की बातों पर इसलिए हुआ कि वे अपने सबसे मशहूर पुरखे मौलाना हुसेन अहमद मदनी (1879-1957) के हवाले से कथन ठीक से नहीं पेश कर पाए. सात साल तक अंग्रेजों की जेल में रहे मौलना ने 'अल्लाह और ओम एक हैं, इस्लाम सबसे पुराना मजहब है' जैसे पचड़ों में पड़ने के बजाय अपनी पुस्तिका मुत्तहिदा कौमियत और इस्लाम में राष्ट्र के भावी शासन की रूपरेखा प्रस्तुत की.

इतिहासकार बरबारा डी मेटकाफ (हुसेन अहमद मदनी : द जिहाद फार इस्लाम ऐंड इंडियाज फ्रीडम) लिखती हैं, 'विविधतापूर्ण धार्मिक पृष्ठभूमियों वाले समाज में उन्होंने सेक्युलर सरकार का इस्लामी औचित्य स्थापित किया....उन्होंने इकबाल के इस मत का प्रतिवाद किया कि कौम और मिल्लत एक ही हैं. उन्होंने स्थापित किया, कि पैगंबर ने जिस कौम की बात कही, समान उद्देश्यों के लिए उसमें अल्लाह में यकीन रखने वालों और न रखने वालों, दोनों के लिए स्थान है और भारत में कौम के लिए वही एक मॉडल है.'

आदम के भारत में अवतरित होने के बारे में हुसेन अहमद मदनी ने भी लिखा था, मगर उस पर सरफुटौव्वल नहीं हुई. मेटकाफ के अनुसार, हुसेन अहमद मदनी ने तर्क दिया कि मुसलमानों के लिए मक्का के बाद पवित्रतम स्थान भारत है, क्योंकि श्रीलंका में 'आदम की चोटी' के नाम से मशहूर जगह पर ही आदम बहिश्त से निकाले जाने के बाद उतरे थे. उल्लेखनीय है कि मुसलमान इस्लामी परंपरा का नाता आदम से जोड़ते हैं और उनके व पैगंबर मोहम्मद के बीच हुए सभी पैगंबरों की भी अकीदे से इज्जत करते हैं.

महात्मा गांधी की नित्य प्रार्थना का अभिन्न भजन था, ईश्वर अल्लाह तेरो नाम, सबको संमति दे भगवान. इसके पीछे संकीर्ण धार्मिकता से दूर समस्त मानव जाति के कल्याण की पवित्र भावना थी. आज ईश्वर और अल्लाह को एक बताने पर झगड़ा पैदा हो जाता है, क्योंकि दिल साफ नहीं हैं. विभाजक दीवारें खड़ी करने के लिए अनेक मुद्दे हैं. हदीसों का कोई एक सर्वमान्य संकलन नहीं है. कुछ लोग दावा करते हैं कि हजरत मोहम्मद की कथनी और करनी से अलग कई हदीसें बाद में जोड़ी गईं. इमाम बुखारी के मान्य हदीस संकलन में ही आए कई जिक्रों पर सार्वजनिक चर्चा से बात बिगड़ सकती है. हजरत मोहम्मद के बाद विरासत के विषय पर हुए मतभेद कभी दूर नहीं होने वाले. इस्लामी दुनिया में सर्वग्राही और विखंडनकारी, दोनों तरह की व्याख्याएं मौजूद हैं.

हिंदू समाज में भी अनगिनत दरारें हैं. वर्णाश्रम व्यवस्था उचित है या अनुचित, जाति कब पैदा हुई? पवित्र-अपवित्र की अवधारणा के चलते संपूर्ण भारत के हिंदू कितना भाई-भाई हैं? हाल में जाति के मूल पर हुई बहस में एक व्यक्ति की हत्या कर दी गई. मृतक और कथित हत्यारे का संबंध एक ही वैचारिक परिवार से बताया जाता है.

गांधीजी और बाबा साहब आंबेडकर के महती प्रयासों के बावजूद आज भी मंदिर में प्रवेश पर अनुसूचित जाति वाले हिंसा का शिकार हो जाते हैं. आस्थाओं का कोई गणितीय फार्मूला नहीं हुआ करता. धार्मिक विश्वासों के कृत्रिम सम्मेलन पर वक्त नहीं बर्बाद किया जाना चाहिए. मानव जाति का इतिहास साक्षी है कि यह नामुमकिन बना रहेगा. अल्लाह और ओम की अवधारणाएं नितांत भिन्न हैं. सहमति इस कथन पर भी नहीं हो सकती कि हिंदू-मुसलमान के पूर्वज एक हैं या उनका डीएनए एक है. कानून और संविधान से परे हो जाने पर ही ये आख्यान उत्पन्न होते हैं. राष्ट्र, राष्ट्रीय चिंतन और नागरिक समस्याओं के समाधान का पथ तो संविधान प्रशस्त करता है.

- प्रदीप कुमार

शिशु दूध के नमूनों का अवैध वितरण

आईएमएस ऐक्ट 1992 की धारा 4(ए) में स्पष्ट लिखा हुआ है कि उपहार स्वरूप डॉक्टरों के बीच शिशु दुग्ध पैकेट का वितरण अवैध है.

बाजार में शिशु दूध के पैकेटों की भरमार है. तमाम कंपनियों के पैकेटों पर बकायदा आईएसआई मार्क लगा हुआ है, जिन्हें ऑनलाइन भी खरीदा जा सकता है. एलबीडब्लू यानी लो बर्थ वेट इन्फेंट मिल्क (समय पूर्व जन्मने वाले कम वजन के बच्चों के लिए) दूध बेचे जा रहे हैं, लेकिन इधर कुछ कंपनियों ने डॉक्टरों के बीच 'लो बर्थ वेट इन्फेंट मिल्क फार्मूला' सैंपल पैकेट बांटना शुरू किया है. ऐसा कंपनियां डॉक्टरों के माध्यम से शिशु दुग्ध पैकेटों को स्वीकृति दिलाने के लिए करती हैं, जिनका वितरण पूरी तरह से अवैध है. खानापूरी के लिए वैधानिक चेतावनी के रूप में इन पैकेटों पर लिखा रहता है- 'मां का दूध आपके बच्चे के लिए सर्वोत्तम है.' इस तरह से एक बार फिर शिशु खाद्य को बाजार द्वारा हथियाने का कुचक्र रचा जा रहा है.

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लूएचओ) के दिशा-निर्देशों के अनुसार, नवजात बच्चों के लिए मां के दूध का कोई विकल्प नहीं है. पूरी दुनिया में छह माह तक के नवजात बच्चों को सिर्फ मां का दूध देने का अभियान छेड़ा गया है. पहले अपने यहां सेरीलैक जैसे उत्पादों को कंपनियों ने नियंत्रणकारी संस्थाओं को प्रभावित कर खूब बेचा. बेबी पाउडर, साबुन आदि सौंदर्य प्रसाधनों को बेचकर बच्चों की सेहत को नुकसान पहुंचाया. जब हकीकत सामने आई और बेबी पउडर में पाए जाने वाले हानिकार एस्बेस्टस का खुलासा हुआ, तो जॉनसन ऐंड जॉनसन पर अमेरिका में जुमार्ना लगा. फिर उसने अपने उत्पादों को बाजार से हटाया.

कुछ जागरूक डॉक्टरों की पहल पर अपने देश में 'द इन्फेंट सब्स्टीट्यूट्स, फीडिंग बॉटल्स ऐंड इन्फेंट फूड्स (रेगुलेशन ऑफ प्रोडक्शन, सप्लाई ऐंड डिस्ट्रीब्यूसन) ऐक्ट 1992'बना. इस अधिनियम की धारा 4(ए) में स्पष्ट लिखा हुआ है कि उपहार स्वरूप शिशु दुग्ध पैकेट का वितरण अवैध है. लेकिन आज इन कंपनियों को कानून की कोई परवाह नहीं है. संक्षेप में, इस ऐक्ट को आईएमएस ऐक्ट कहते हैं. इसकी धारा तीन और चार में इसलिए प्रावधान किए गए हैं कि बच्चों के डॉक्टर छह माह तक केवल मां का दूध पीने की सलाह दें और शिशु दुग्ध के नाम पर बेची जा रही कंपनी उत्पादों का समर्थन न करें.

पूर्व आईएमएम सदस्य, बालरोग विशेषज्ञ, जॉ के पी कुशवाहा कहते हैं, 'बाहरी खाद्य पदार्थ बच्चों के मानसिक विकास और प्रतिरोधी क्षमता को आजीवन प्रभावित करते हैं.' मगर बहुराष्ट्रीय कंपनियां अपने लाभ के लिए डॉक्टरों को प्रभावित कर, उनके माध्यम से डिब्बा या पैकेट बंद शिशु खाद्यान्नों को बाजार में स्थापित करने का कुचक्र करती रही हैं. यह पूरी तरह से आईएमएस ऐक्ट 1992 का उल्लंघन है.

कंपनियां जानती हैं कि इस ऐक्ट के अंतर्गत कार्यरत फूड इंस्पेक्टर की तैनाती न तो पर्याप्त है और न उनके पास जांचने के पर्याप्त साधन हैं. डॉक्टरों को सुख-सुविधा देकर बहुराष्ट्रीय कंपनियां प्रभावित करती हैं. भारतीय चिकित्सा संगठन द्वारा बनाए गए नियम 6.8.1 में ही खामी दिखती है, जो डॉक्टरों द्वारा दवा कंपनियों से उपहार, किराया सुविधा लेने को रोकने की वकालत तो करता है, पर सहकारिता अधिनियम की धारा 1860 के अंतर्गत पंजीकृत संस्थानों पर यह नियम लागू नहीं माना जाता. भारतीय बालरोग परिषद, राष्ट्रीय प्रतिरक्षण सलाहकार समूह का सदस्य है, ऐसे में वह लाभ प्राप्त कर, कंपनियों के उत्पादों के हित में काम करता है, तो इसमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए. पद्मश्री विजेता डॉ. के के अग्रवाल ने बहुत पहले कहा था कि, 'शिशुओं के लिए, बाजार में जो तमाम उत्पादों के विज्ञापन आते हैं, जिनमें उनकी हड्डियों को मजबूत करने के लिए तेल, त्वचा की हिफाजत के लिए अलग तेल और नहाने के लिए भिन्न प्रकार के साबुन की वकालत की जाती है, ये सब कंपनियों के झूठे प्रचार के बल पर अकूत धन कमाने का षड्यंत्र है. लगभग सभी बेबी पाउडर बच्चे को नुकसान पहुंचाते हैं.' अब देखना यह है कि डॉक्टरों के बीच बांटे जा रहे शिशु दुग्ध सैंपल पैकेटों के लिए संबंधित कंपनियों के विरुद्ध कार्रवाई होती है या नहीं? -

सुभाष चंद्र कुशवाहा

मनसा वाचा कर्मणा

नाप-तौल भी जरूरी है

एक रोगी अपने इलाज के लिए शहर के मशहूर डॉक्टर के पास गया. वहां रोगियों की एक लंबी कतार लगी हुई थी. वह रोगी धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करता रहा. आखिरकार उसकी भी बारी आई. डॉक्टर ने विधिवत उसका परीक्षण किया. फिर पुर्जे पर कई दवाइयां लिखीं और उसे समझाया कि मैंने आपके लिए सारे निर्देश लिख दिए हैं. आप उनका पालन करेंगे, ठीक समय पर दवाएं लेंगे, अपने स्वास्थ्य का ध्यान खुद रखना होगा. भोजन में कुछ चीजों की मनाही है, उसका सख्ती से पालन कीजिएगा. रोगी ने सहमति में अपना सिर हिलाया. जब वह उठकर जाने लगा, तो डॉक्टर ने कहा- एक जरूरी बात है और! हर रोज दस हजार कदम चलना नहीं भूलिएगा.

घर पहुंचकर रोगी सोचने लगा कि आदमी के जीवन में हिसाब-किताब बहुत ज्यादा है. यह जिंदगी भी तो हमें नाप-तौलकर मिली है. न कम, न ज्यादा. इसी सिद्धांत पर हमें सुख की प्राप्ति होती है. इसी से भोजन में स्वाद पैदा होता है. चुटकी भर नमक कम या ज्यादा हो जाए, तो सारा स्वाद बिगड़ सकता है. यही बात शरीर की सुंदरता पर भी लागू होती है. जिसे हम सुंदरता कहते हैं, वह भी तो मात्राओं का ही खेल है. यदि अनुपात सही हो, तो कोई वस्तु हमें प्रभावित कर सकती है. तराजू के पलड़े जब सम रहते हैं, तभी उनका मूल्यांकन सही होता है. कवियों ने तुला के जरिये मानव चरित्र की परख की है. कवि रहीम कहते हैं, रंचहि सो ऊंचो चढै, रंचहि सो घटि जाए. तुलकोटि खल दुहुन की एकै रीति खलाए.यह तराजू मनुष्य के जीवन का प्रतीक जैसा दिखाई देता है. तराजू के दोनों पलड़े बराबर होने चाहिए. सब कुछ संतुलित और सुचारू रूप से व्यवस्थित हो, तो जीवन सौंदर्य से भर उठता है. यही बात सुंदरता के विषय में भी लागू है. वहां भी इस संगति की आवश्यकता पड़ती है. इसके अभाव में जीवन के तत्व बिखर जाते हैं. यह तुलना न्याय का भी प्रतीक है. सम दृष्टि ही न्याय का आधार बनती है.

पुराणों में काशी के तुलाधार वैश्य की कथा आती है, जो व्यापार करते हुए भी सदाचारी और धार्मिक थे. उधर दूर कहीं जाबालि नामक ऋषि घोर तपस्या कर रहे थे. उनके दुर्बल शरीर को वृक्ष समझकर उनके जटाजूट में चिड़ियों ने घोंसले बना लिए. तपस्या के फलस्वरूप ऋषि को दिव्य दृष्टि मिल गई, तो उनके मन में अहंकार आ गया कि मैं सब जान और देख सकता हूं. तभी आकाशवाणी से उन्हें तुलाधार वैश्य के पास जाने की प्रेरणा मिली. वह काशी जाकर तुलाधार से मिले. तुलाधार वैश्य ने उन्हें देखते ही उनकी कहानी बता दी. ऋषि का अहंकार टूटा और उन्हें सदाचार की शक्ति का अनुभव और ज्ञान हुआ कि जीवन की तपस्या जंगल की तपस्या से कहीं बड़ी होती है.

- महेंद्र मधुकर

तेजी से बदल रहा सीजन

गर्मी अभी दूर है, फिर क्यों तप रही फरवरी

जम्मू-कश्मीर, शिमला का भी यही हाल है. भारतीय मौसम विज्ञान विभाग के अनुसार, देश में 16 फरवरी को खत्म हुए हफ्ते में औसत अधिकतम तापमान 27.52 डिग्री था.

फरवरी खत्म होने में अभी देर है, मगर देश के कुछ हिस्सों में तापमान 40 डिग्री को छू रहा है. फरवरी का सुहाना मौसम कुछ सालों से बीती बात बन चुका है. जनवरी की ठंड के बाद अचानक गर्मी शुरू हो रही है. मैदान तो मैदान, पहाड़ भी अभी से गर्म होने लगे हैं. हालत यह है कि पहाड़ी फलों के पेड़ों में वक्त से पहले ही फूल आ गए हैं. 2022 के बाद लगातार 2023 में भी गर्मी का यही ट्रेंड दिख रहा है.

गर्म होती धरती

फरवरी के तीसरे हफ्ते में ही पश्चिमी हिमालय और उत्तर पश्चिमी मध्य भारत में तापमान तेजी से बढ़ा है. राजधानी दिल्ली सामान्य से 6 डिग्री अधिक गर्म है. गुजरात के भुज में तापमान 40 डिग्री पर पहुंच चुका है. राजस्थान के कुछ हिस्सों में भी अधिकतम तापमान सामान्य से 5 से 7 डिग्री अधिक चल रहा है. जम्मू-कश्मीर, शिमला का भी यही हाल है. भारतीय मौसम विज्ञान विभाग के अनुसार, देश में 16 फरवरी को खत्म हुए हफ्ते में औसत अधिकतम तापमान 27.52 डिग्री था. यह 1981-2010 के औसत से 0.39 डिग्री अधिक है. आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और महाराष्ट्र में इस साल 16 फरवरी को समाप्त होने वाला हफ्ता 1951 के बाद सबसे गर्म रहा. राजस्थान, गुजरात, छत्तीसगढ़, कर्नाटक, केरल, ओडिशा और मिजोरम देश के 10 सबसे गर्म स्थानों में एक रहे. 1951 के बाद से 20 सबसे गर्म हफ्ते वाले राज्यों में पंजाब, दिल्ली, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, झारखंड और तमिलनाडु शामिल हैं.

क्यों तपा देश

आमतौर पर उत्तरी भारत का मौसम वेस्टर्न डिस्टर्बेंस से काफी प्रभावित होता है. सामान्य तौर पर फरवरी में छह वेस्टर्न डिस्टर्बेंस आते हैं. इस बार ये आ तो रहे हैं लेकिन काफी कमजोर हैं. इसलिए न बारिश दे पा रहे हैं, न पहाड़ों पर बर्फबारी करवा पा रहे हैं. इनके बीच का अंतर भी काफी कम है. वेस्टर्न डिस्टर्बेंस के आने से उत्तरी भारत में ठंडी हवाओं का आना रुक जाता है. जब इनके बीच अंतर होता है तो उस दौरान ठंडी हवाएं आती हैं और मौसम ठंडा कर देती हैं. यह भी समझना होगा कि अब गर्मी बढ़ना सामान्य हो गया है. लगभग हर साल और हर महीना पहले वाले से थोड़ा अधिक गर्म हो रहा है.

पूर्वी प्रशांत महासागर में ला-नीना के बावजूद 2020 सबसे गर्म सालों में एक था. आमतौर पर ला-नीना के कारण तापमान में कमी आती है, लेकिन ऐसा हुआ नहीं.

इसकी वजह क्लाइमेट चेंज को माना जा रहा है. फिर मौसम में जो बदलाव आ रहे हैं वह एक-दो वर्षों की बात नहीं है. पिछले 20-25 सालों से वसंत ऋतु छोटी होती जा रही है. सर्दियों के बाद सीधे गर्मी शुरू हो जाती है.

तापमान के बढ़ने का असर यह देखने को मिल रहा है कि बारिश का पैटर्न बदल गया है. अरब सागर में तेज चक्रवातों की आवृत्ति बढ़ गई है. वहीं हिमालय के ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं और महासागर गर्म हो रहे हैं. हिंद महासागर का जलस्तर बढ़ रहा है.

तापमान बढ़ने से सीजन तेजी से बदल रहा है, जिसकी वजह से जीव-जंतुओं को उसके अनुसार खुद को ढालने में दिक्कत हो रही है. इस वजह से कई जीव विलुप्त हो सकते हैं.

फिर फसलों पर भी इसका असर पड़ रहा है. जिस तरह से तापमान बढ़ रहा है, गेहूं उत्पादन कम होने की समस्या बढ़ रही है. गुठलीदार फलों के वृक्षों में फूल समय से पहले आ रहे हैं.

गलत शहरीकरण

भारतीय शहरों का स्वरूप पिछले कुछ दशकों में तेजी से बदला है. हरियाली में कमी आ रही है. विकास के नाम पर पेड़ काटे जा रहे हैं. इमारतों की संख्या और ऊंचाई बढ़ रही है. घरों में एसी का इस्तेमाल बढ़ रहा है. पक्की सड़कों और फ्लाईओवर का विस्तार तेजी से हो रहा है. ऐसे में शहर को अब अर्बन हीट आइलैंड कहा जाने लगा है. अगर हवा की गति कम है, तो शहरों को अर्बन हीट आइलैंड बनते आसानी से देखा जा सकता है.

- पूनम गौड़

अब मारबर्ग वायरस का खतरा

अफ्रीकी देश में अब एक और नये वायरस ने दस्तक दे दी. बीते दिनों विश्व स्वास्थ्य संगठन ने मारबर्ग वायरस को नेकर चिंता जताई है. मारबर्ग वायरस रोग एक अत्यधिक क्रामक वायरल रक्तस्त्रावी बुखार है, जो लगभग इबोला वायरस की तरह है. माना जा रहा है कि ये फिलोविरिडे रिवार के पशु जनित आरएनए वायरस से फैलता है. मारबर्ग वायरस का पहला मामला अफ्रीकी देश न्क्वेटोरियल गिनी में आया था जो अफ्रीकी फल से कला था जिसको चमगादड़ों ने खाया था. इसके बाद खान और गुफाओं में काम करने वाले लोगों में इसका पहला मामला सामने आया जो धीरे-धीरे करके बाकी लोगों में भी फैल गया. अब तक वहां पर इस वायरस से 9 लोगों की जान जा चुकी है.

एक्सपर्ट्स का कहना है कि आने वाले समय में वहां स्थिति और ज्यादा गंभीर हो सकती है. साथ ही संक्रमण से होने वाली मृत्यु दर 88 फीसद तक जा सकती है. इसके अलावा ये भी कहा जा रहा है कि अगर स्थिति एक बार अनियंत्रित हो गई तो यकीनन ही ये बाकी देशों तक भी फैल सकता है.

- निधि जैन

लेडिज फर्स्ट क्यों

आज भी हमारे समाज में लेडिज फर्स्ट थ्योरी रह गई है. इसका मतलब शायद आज भी नारी दया की पात्र हैं. राजनीति से लेकर व्यवसाय तक, क्रीड़ा से लेकर शिक्षा तक सभी क्षेत्र में नारी आधुनिक जगत में पुरुष से किसी भी तरह से कम नहीं. कहने का अशय यही कि आज किसी भी क्षेत्र में महिलाएं पीछे नहीं दिखाई पड़तीं फिर लेडिज फर्स्ट क्यों? इसे नारियों का सम्मान कहा जाए या फिर नारियों का असम्मान. इस मामले पर हम सभी को विचार करना चाहिए. नारी के लिए असल में सम्मान वही होगा जब रात के 12 बजे अकेले घूम-फिर सके, बिना डरे कहीं भी जा सके. आधी आबादी तभी सुकून महसूस करेगी.

- मानस रंजन प्रधान

सजगता है जरूरी

वैज्ञानिकों के मुताबिक पूरा भारतीय उपमहाद्वीप धीरे-धीरे भूकंप वाले खतरनाक जोन में आता जा रहा है. कब उच्च स्केल का भूकंप आ जाए, कहना मुश्किल है. वैज्ञानिकों के मुताबिक दिल्ली, दिल्ली के आसपास और देश का पश्चिम-उत्तर क्षेत्र अतिसंवेदनशील क्षेत्र है. इसलिए हर वक्त, हर उम्र और हर वर्ग के लोगों में सजगता और संवेदनशीलता की जरूरत है. महज ज्यादा वेधशालाएं स्थापित करने से उच्च स्तर के भूकंपों से जानमाल से पूरी तरह बचाव करना नामुमकिन है. वैज्ञानिकों का मानना है कि भूकंप के प्रति बेहतर तैयारी और सजगता यदि आम आदमी में हो तो भूकंप से नुकसान नाम मात्र का ही होगा. इसलिए वाडिया भू-विज्ञान संस्थान हिमालय क्षेत्र के स्कूलों और गांवों में जाकर लोगों को जागरूक करने का कार्य करता है. इससे इस क्षेत्र के लोगों में भूकंप के प्रति सजगता और संवेदनशीलता आई है. गौरतलब है हिमालय क्षेत्र में 60 वेधशालाएं कार्य कर रही हैं जो भूकंप की हर गतिविधियों की पल-पल की जानकारी देती रहती हैं. लेकिन सोशल मीडिया, टीवी चैनलों और अखबारों के जरिए आम लोगों के जान माल को भूकंप से बचने के लिए सतर्क और सजग किया जा सकता है. साथ ही जरूरी यह भी है कि भवन या बहुमंजिला इमारतें बनाते वक्त उनमें इस्तेमाल होने वाले मटेरियल पर ध्यान दें और भूकंपरोधी नियमों का भी कड़ाई से पालन करें.

- अखिलेश आर्येन्दु

बंद हो नंबर गेम

ज्यादा नंबर लाने की होड़, दबाव, संघर्ष और इसके बीच में पिसता किशोर. अभी-अभी बचपन की दहलीज छोड़ी है और पहला अनुभव ही इतना कटु? दुनिया क्या ऐसे ही गलाकाट प्रतिस्पर्द्धा से चलती है? एक तरफ कॉलेजों में दाखिले की मारामार होगी, तो दूसरी ओर हायर सेकेंडरी में अपने पसंद के विषय लेने के लिए माकूल अंकों की दरकार. क्या किसी बच्चे की योग्यता, क्षमता और बुद्धिमता का तकाजा महज अंकों का प्रतिशत ही है? वह भी उस परीक्षा प्रणाली में, जिसकी स्वयं की योग्यता संदेह से घिरी हुई है. मूल्यांकन का आधार बच्चों की योग्यता ना हो कर उसका ज्यादा-से-ज्यादा नंबर लाना है. यह सरासर नकारात्मक सोच है, जिसके चलते बच्चों में आत्महत्या, पर्चे बेचने-खरीदने की प्रवृति, नकल व झूठ का सहारा लेना जैसी बुरी आदतें विकसित हो रही हैं. शिक्षा का मुख्य उद्देश्य इस नंबर - दौड़ में गुम हो कर रह गया है. इस परिपाटी को बदल देने की जरूरत है.

- पंकज चतुर्वेदी

प्रतिदिन अखबार

यह पत्र मालिक, प्रकाशक, सम्पादक नानक आहूजा द्वारा देविका वेब प्रिंटर्स, राजापेठ, अमरावती से मुद्रित कर प्रतिदिन अखबार कार्यालय, देविका परिसर, ब्राम्हण सभा के पीछे, दरोगा प्लॉट, राजापेठ, अमरावती 444606 से प्रकाशित किया है. फोन - 0721-2660155/56/57/58 फैक्स - 0721-2677708 E-mail:-pratidinnews@gmail,com प्रतिदिन अखबार में प्रकाशित होनेवाले विभिन्न लेख, पत्र,साहित्य, लेखकों, कवियों आदि के विचारों या तथ्यों पर आधारित होते हैं. इन लेखकों के विचारों अथवा तथ्यों से संपादक की सहमति नहीं है. संपादक पर मात्र सम्पादकीय लेखों का हो दायित्व है. संपादक - नानक आहूजा, समाचार संपादक - प्रवीण आहूजा.